ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(11): 292-294
www.allresearchjournal.com
Received: 23-09-2020
Accepted: 25-10-2020

लक्ष्मी कुमार कर्ण
पूर्व शोध–प्रज्ञ (यू॰जी॰सी॰)
विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर मैथिली विभाग ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
लक्ष्मी कुमार कर्ण
पूर्व शोध–प्रज्ञ (यू॰जी॰सी॰)
विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर मैथिली विभाग ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

मैथिली उपन्यासक चरित्र–वर्णनक क्रममे प्रतीक रूपमे वर्णित वनस्पति

लक्ष्मी कुमार कर्ण

प्रस्तावना

मैथिली उपन्यासमे पात्रक चरित्र–वर्णनक क्रममे गाछ–वृक्ष–लता–पौध ओ ओकर उत्पाद फल–फूल आदि प्रतीक रूपमे वर्णित भेल अछि। कोनो पात्रक शारीरिक वर्णन हो वा भाव प्रदर्शन सभ ठाम एकर प्रतीकात्मकता एकटा सुन्दर बिम्ब प्रस्तुत करैत अछि। एतेक धरि जे कतेको पात्रक नाम ओ गामक नाम सेहो वनस्पति ओ ओकर उत्पादक नामपर अछि। मोहरावरा, लोकोक्ति, उपमा आदिमे वनस्पतिक प्रयोग त' कथ्यमे उत्प्रेरक सदृश रस–संचार कए दैत अछि।

श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' विरचित 'पारो' उपन्यासमे वर्णन आएल अछि जे नायिका पारोक मुँह दिनुका कुमुदिनी फूल जकाँ महला गेल। लाजे पारोक मुँह सिनुरिया आम भ• गेल। नायिका पारो काँच कली छलीह।[1]

प्रो0 हरिमोहन झा कृत 'कन्यादान'मे स्थल विशेषपर कहल गेल अछि जे दाम्पत्त्य जीवन चिरैताक काढ़ा जकाँ तीत नहि लागि कुसियारक रस जकाँ मीठ लागत। एकठाम मैयाक कथन अछि जे राड़–रोहिया डुमरीक फूल भ• गेल। [2]

'मणिपद्म'कृत 'नैका–बनिजारा'मे{3} नायिकाक नख–शिख [4] वर्णन क्रममे कहल गेल अछि –

'आरतक पातसन अधरपुट'
'कमलनयन'
'कपोल पलाश फूल'
'तिलकोड़क फरसन अधर'
'कमलफूल जकाँ फूलाएल जायब'

भाव–प्रदर्शन प्रतीकरूपमे वनस्पति 'मणिपद्म' कृत 'लोरिक विजय'मे एहि रूपें वर्णित भेल अछि –

'सोनिकार्के देखि ओ पछवा बसातमे कड़ड़ीक भालरि जकाँ काँपि गेल।'
'माँजरि लोरिककेँ देखिकए प्रातःकालीन कमलिनी जकाँ उत्फुल भए उठलि।'
'चनैन पीपड़क पातजकाँ काँपि गेल।'

'भोरूकवा' मे सेहो वर्णित अछि जे 'राधेक डरसँ सभ केराक भालरिजकाँ कँपैत छल'। [4]

'नैका बनिजारा'मे –

'फूलो हँसलि – लगलइ जेना एक डाली सिङरहार झहरि गेलइ।'
'मद्यपानसँ आँखि ओड़हुल फूल भए गेल छल ।'

'मणिपद्म' जी लोरिक–विजय [5] मे नायिका–वर्णन करैत छथि –

'चम्पासन रंग'
'तिलफूलसन नाक'
'ओरहूलसन ठोर'
'नीलकमलसन आँखि'

पुनः

'तीसीफूलसन वर्ण'
'तिलफूलसन नाक'

'भलमानुस'मे पं0 योगानन्द झा लिखैत छथि – बरियाती लोकनिकेँ खाली एके जोड़ धोती भेल रहैन्ह तेँ सभ केओ लड़कीक पिता भोलानाथकेँ अदत्तक गाछ कहि निन्दा कएलनि।[6]

'मणिपद्म' जी 'राजा सलहेस'[7] मे अरण्याक नख–सिख वर्णन अति आकर्षक रूपेँ कएलनि अछि –

'केराक सोहल थम्हसन छह–छह जाँघ आ हाथ' 'तिलकोड़क फरसन रंगल ठोर' 'तिलफूलसनक नाक' 'सखुआक धड़िंगजकाँ ठाढ़' 'पछवा बसातसँ ताड़ित पीपड़क गाछजकाँ हाहाकार करब' उपर्युक्त वर्णनमे वनस्पतिक उपमाक जे सहयोग लेल गेल अछि ओहिठाम आन कोनो वस्तुक उपमान ओ तरंग उत्पन्न नहि कए सकैत अछि, जे वनस्पति कैलक अछि । वस्तुतः वनस्पति एहि रूपमे विशिष्ट अछि।

'मणिपद्म'क 'फुटपाथ'मे वनस्पतिकेँ देखल जाय –

'अस्त–व्यस्त आ त्रस्त केश, जेना पटपटी घासक कोलीकेँ विरड़ो उधेस देने हो।[8]

'फूल सन नेना'
'गाल पर गुलाब'
'ठोरपर मधुरी फूल'

डॉ0 शैलेन्द्र मोहन झा 'मधुश्रावणी'मे कहैत छथि –

''रात्रिक कारी चादरिपर तरेगनक मोती जगमगाय लागल जेना निशा–नायिकाक मुक्त–कुन्तलमे केओ सिङरहारक फूल सजा रहल हो।''

'नलिनीक अंग–अंग चम्पाफूल सदृश विकसित छल।[9]
'मुँह गुलाबक फूल सन'
'भालरि सदृश कॉपि गेल ।'
तोँ बिहुँसलि झरय लागल फूल ।
कमल सम कोमल तोहर सखि गति ।
भुजामे छल नव मृणालक कान्ति ।
'शुक्रतारा सदृश शोभायमान कमलाक केश राशिमे फूल ।'
'तोड़त आब महर केर छिम्मरि
के भरि–भरि मौनी ऑचर मे।[10]
'पदकमल'
'रातुक वर्षासँ सिक्त कनैलक फूल आ' रससँ भीजल नलिनी–दुनूमे अपूर्व समता छल।'

यात्रीजी 'पारो'मे नायिका पारोक अंग–प्रत्यंगक वर्णन क्रममे कहैत छथि–

'हाथ सीक सन–सन'
टाङ सन्ठी सन–सन'
'राजा सलहेस'मे सरिताक नाम – चम्पावती सरिता

मानवीकरण :

वनस्पति मनुक्खजकाँ स्पष्ट भाव प्रदर्शन सेहो करैत अछि। एकर ई भाव–भंगिमा, निःस्वार्थ सेवा प्रदर्शन सहृद लोककेँ परम विचलित करैत अछि काश ! मानव–जाति सेहो एकरासँ किछु सीखि सकैत –

शैलेन्द्र मोहन झा कृत 'मधुश्रावणी'मे एकटा नीमक गाछकेँ कृतज्ञक रूपमे मनुक्खसँ आगू देखाओल गेल अछि –

''पंडित सदानन्दक गुजरलाक बाद बीस वर्षक पश्चात् बास स्थान उजाड़ भए गेल । बूझि नहि पड़ैक जे ई हुनकर बास–स्थल होइक। केवल पंडित जीक रोपल नीमक गाछटा वर्त्तमान अछि जे सभ साल ओहि महान आत्माक प्रति अपन फल–फूल अर्पित कए श्रद्धांजलि दैछ।''[11]

नीम गाछक ई कृतज्ञता ज्ञापन मनुष्यकेँ बहुत पाछाँ छोड़ि दैत अछि जे पंडित जीक गुजरलाक बाद हुनक बास–स्थल दिसि अएबो उचित नहि बुझैत छथि। गामक धिया–पूता सभकेँ ई अप्पन बच्चा सदृश बुझैत छलाह। शरद कालमे सिङरहारक फूल बिछबाक लेल पंडित जीक फुलवारीमे धिया–पूताक समूह भिनसुरकीए रातिसँ जुटि जाइत छल। ओ स्वयं सेहो सकाले उठैत छलाह आओर अपनहि हार्थे फूल बीछि सभक फूलडाली भरि दैत छलथिन। आइ ओएह फुलवारी विरान अछि आ लोक पंडित जीकेँ बिसरि गेल अछि ।

वनस्पतिक मानवीकरणक एकटा सुन्दर निदर्श भेटैत अछि डॉ0 ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म' कृत 'नैका बनिजारा' मे। एहिमे बूझि पड़ैत अछि जेना ई मनुक्खेजकाँ चेतन हो –

नायिका फूलेश्वरी द्वारा ई कहब जे ''जा हे चम्पा–बिरिछ। जानि ने जानि फेर कहिया तोरासँ भेँट होएत '' –

बूझि पड़ैछ जेना ई चम्पा फूलेश्वरीक सखी हो।

पुनः एकटा केराक गाछ पुरवाक सिहकीमे अपन पातक हाथ हिला क' राजकुमारीकेँ सोर पारलक। राजकुमारी फूलेश्वरी केराक गाछसँ दू हत्था केरा तोड़ि लेलनि एहि क्रममे झिकझोरमे पातपरसँ ओसकण झहरि गेल । एहिपर नायिकाक ई कथन जे –

'बेटीक विदाकालमे नहिराक गाछो–बिरिछ कान• लगैत छैक' – पूर्णतः मानवीय संवेदनाकेँ प्रगट करैत अछि।

'मणिपद्म'कृत 'लोरिक–विजय'मे एकटा चाननक गाछकेँ सहोदर भाइसँ अधिक भावुक ओ संवेदनशील देखाओल गेल अछि –

'नायक लोरिक गह्वरमे एकटा चाननक वृक्ष रोपने छलाह आ' ओ ओकरा सभ दिन गंगाजलसँ पटबैत छलाह । जखन लोरिकक छोटभाय सावरक मृत्यु भ' जाइत अछि त' ओ वृक्ष एके दिनमे सुखा जाइत अछि। –

वृक्षक एके दिनमे सुखा जायब ई प्रदर्शित करैत अछि जे ओ वृक्ष लोरिकक परिवारक संग सावरक मृत्युशोकक सहभागी भेल आ' ओहि दुःखकेँ नहि सहि सकल फलस्वरूप एके दिनमे सुखा गेल । एहिठाम चाननक गाछ सावरक सहोदर भाइ लोरिकसँ अधिक भावुक ओ संवेदनशील बुझना जाइत अछि ।

शैलेन्द्र मोहन झा कृत 'मधुश्रावणी'मे गाछ मायक रूपमे द्रष्टव्य अछि –

''पंडित सदानन्द ठाकुरक शान्ति–कुञ्जक कात–कातमे जे आम, कटहर, लताम, नीम आदिक गाछ छल तकर 'प्रसन्न छाहरि मधुर ममता सदृश सदिखन अपराजिताक लता – कुञ्जकेँ आच्छादित कयने रहैत छल ।''[12]

एहिठाम आम–कटहर ओ अपराजिताक लता– कुञ्जमे माय–बेटीक संबंध बूझि पड़ैत अछि । जेना माय अपन आँचरसँ शिशुकेँ झाँपि शीत–रौदसँ सुरक्षा करैत थिकीह तहिना आम–कटहर सेहो अपन छाहरिक आँचरसँ झाँपि अपराजिताक लता–कुञ्जक रक्षा कए रहल अछि।

'निशातक बाग' जेना मुग्धा नायिका सदृश पहाड़क कोरमे सूतल हो।'

एहिठाम निशातक बाग मुग्धा–नायिकाक रूपमे उपस्थित भेल अछि।

ईश्वरीकरण :

सामन्ती पृष्ठभूमि पर लिखल गेल उपन्यास 'मरीचिका' लेखिका–श्रीमती लिली रे मे वनस्पतिक मानवीकरणसँ आगू बढ़ि ईश्वरीकरणसँ सेहो साक्षात् कराओल गेल अछि एहिठाम वनस्पतिमे पूर्ण चेतनता सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि [13] –

''रानीजीक अन्त समय आबि गेल छल । कामादाइ, अहिल्यादाइ, चन्द्रकान्तादाइक माय, राँटीबाली सब केयो मिलिक' रानीजीकेँ बाहर ल• अनलथिन ।

तुलसीक चौरा लग अमलताशक गाछ छल ताहीतरमे ओछाओन बिछा देलथिन हीरा । रानीजीकेँ ओहीठाम सुता देल गेलनि। फागुनक टहाटही ईजोरिया पछिला साँझ धुरखेल छल अगिला भोरसँ रंगक खेल। अमलताशक गाछपूर्ण यौवन पर छल। झूमकाजकाँ लटकैत पीयर फूल एखन झड़बाक योग्य नहि भेल छलैक। ओही गाछपर अपराजिताक फूलक लत्ती सेहो चढ़ाओल गेल छल। रानीजीक धवल शैय्या, धवल वस्त्र पर दूटा अपराजिताक नील फूल खसि पड़लनि।

''हीरा एकटा फूल रानीजीक हृदय स्थान पर आ दोसर हुनकर कपार पर ध' देलखिन। सूर्यपुरक उज्जवल, निदग रानीपर ककरो नजरि नहि लगैक तेँ भगवती स्वयं दीठ लगा देने छलथिन।''

एतय अमलताशक गाछक रूप साक्षात् भगवती सदृश अछि। पूर्ण यौवना, कानमे लटकैत झूमका, हरियर कचोर वस्त्र (अपराजिताक), ओहि वस्त्रपर काढ़ल नील फूल । सब किछु त• ओही महाविद्ये सदृश अछि। ताहि पर सँ ई कथन जे 'भगवती स्वयं दीठ लगा देने छलथिन'

भगवतीक साक्षात् उपस्थितिर्कें दर्शा रहल अछि । रानीजी भगवतीक परम भक्तिन छलथिन । तैं अन्त समय भगवती हुनक उज्जवल निदग चरित्रपर अपनेसँ दीठ किएक नहि लगोतीह ?
सुन्दर चित्रांकण भेल अछि अमलताशक भगवतीक रूपमे । अपराजिताक नील फूलसँ काजरक भ्रम भएनाइ स्वाभाविक थिक ।

आब 'मरीचिका'[14] मे मानवीकरणक निदर्श –

'चन्द्रमाक किरण सड़रक गाछपर छिटकि रहल छल। निर्जन स्थलमे असंख्य सड़रक गाछ कोनिया भेल ठाढ़ छल जेना आकाशर्कें प्रणाम करैत होअए।'
सड़रक गाछ निर्जनमे आकाशर्कें प्रणाम कए रहल अछि से त• स्वभाविर्कें थिक। कारण ओही आकाशक कृपापर ओकर अस्तित्व निर्भर करैत छैक तैं अपन जीवनदातार्कें प्रणाम त• करबाके चाही । इएह त• मानवोचित क्रिया थिक । सड़र अपन एहि क्रियामे कोनो कृतज्ञ मानवसँ कम नहि देखाइ पड़ि रहल अछि।

सड़रक मानवरूपक आरो–आरो निदर्श उपस्थित अछि मरीचिका (भाग–2)[14] मे–

'शिलौंगर्कें कनैत शहरक उपनाम देने छलैक । सएह नाम सार्थक कए रहल छल शिलौंग । हीरा देखथि–सड़रक गाछसँ नोर टपकैत, मकानक छतसँ नोर चुबैत झरना हाहाकार करैत, बसात विलाप करैत ।
पुनः
'शिलौंगमे वर्षाक कोनो समय नहि छलैक । जे कोनो समय पहुँचि जाय मेघ । कान' लागे सड़रक गाछ ।'
एकटा आर विशिष्ट बात वनस्पतिमे अछि जे ओकरा मनुक्खक एकदम ल•ग लए अबैत अछि । ओ थिक ओकर गंध । सभ तरहक गाछ–वृक्ष, लता–पौधक अपन अलग–अलग तरहक गंध होइत अछि । ओहिना जेना मनुक्खक देहक गंध फराक्–फराक् होइत अछि । ओकर एहि विशेषताक प्रयोग 'मरीचिका' (भाग–2) मे एकठाम लेखिका कएने थिकीह ।
''फल तकैत–तकैत रस्ता भुतिया गेला मनीबाबू । पगडंडी कतहु नहि सुझलनि मुदा बसातक गंधमे परिवर्तन बूझि पड़लनि । लग पासमे निश्चय कतहु जामुनक बगीचा छल । मनीबाबू ओहि गंधक दिशामे दौड़• लगला ।''
वसंतमे जेना हमरालोकनि हल्लुक ओढ़ना ओढ़ब पसिन्न करैत छी ओहिना गाछ–वृक्ष सेहो फूल सदृश हल्लुक ओढ़ना ओढ़ैत अछि–
''जाड़क मटियाही रंग मेटा रहल छल । तपस्विनी शिलौंग सोहागिन बनि गेलि । नान्हि–नान्हि डंजीक फूलसँ पहाड़ आच्छादित छल । गाछ–वृक्ष फूलक ओढ़ना ओढ़ि लेलक । जतेक प्रकारक फूल ततेक प्रकारक सुगन्धि ।''
उपर्युक्त विवेचनसँ स्पष्ट होइछ जे मैथिली उपन्यासमे पात्रक चरित्र–चित्रणक क्रममे गाछ–वृक्ष–लता–पौध ओ ओकर उत्पाद फल–फूल आदि व्यापक रूर्पे प्रतीक रूपमे वर्णित भेल अछि । एहि वर्णन सभमे वनस्पति एकटा फराके प्रभाव उत्पन्न करैत अछि । वनस्पतिर्कें मानवीकरण ओ ईश्वरीकरण करब उपन्यासकार लोकनिक बिम्बन क्षमतार्कें उच्च स्तर पर पहुँचा दैत अछि ।

संदर्भ

1. वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', 'पारो' (उपन्यास), 1956
2. प्रो0 हरिमोहन झा, 'कन्यादान' (उपन्यास), 1933
3. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', 'नैका बनिजारा' (उपन्यास), 1972
4. धीरेश्वर झा धीरेन्द्र, 'भोरूकवा' (उपन्यास), 1965
5. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', 'लोरिक विजय' (उपन्यास), 1970
6. पं0 योगानन्द झा, 'भलमानुस' (उपन्यास), 1944
7. ब्रजकिशोर वर्मा, 'मणिपद्म', 'राजा सलहेस' (उपन्यास), 1972
8. ब्रजकिशोर वर्मा, 'मणिपद्म', 'फुटपाथ' (उपन्यास), 1978
9. डॉ0 शैलेन्द्र मोहन झा, 'मधुश्रावणी' (उपन्यास), 1956
10. डॉ0 शैलेन्द्र मोहन झा, 'मधुश्रावणी' (उपन्यास), 1956 पृष्ठ–39
11. डॉ0 शैलेन्द्र मोहन झा, 'मधुश्रावणी' (उपन्यास), 1956 पृष्ठ–02
12. तत्रैव
13. श्रीमती लिली रे, मरीचिका (भाग–1), 1981
14. श्रीमती लिली रे, मरीचिका (भाग–2), 1982।